प्रकाशनार्थ

18 जुलाई, 2024 गोरखपुर।

गुरु पूर्णिमा पर्व के पावन अवसर पर श्रीगोरखनाथ मन्दिर स्थित महन्त दिग्विजय नाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित साप्ताहिक श्रीराम कथा के चतुर्थ दिवस में कथा व्यास सन्त हृदय बालकदास जी महाराज ने कहा कि भगवान् श्रीराम का जहाँ जहाँ कीर्तन होता है वहाँ वहाँ हनुमान जी पहरा देते हैं। प्रभु की कथा हनुमान जी को बुलाने का सबसे सहज उपाय है। जो हनुमान जी भगवान् राम के संकट को भी टाल देते हैं वो हमारे घर पर विराजे तो हमारे जीवन के सभी संकट कट हीं जाते हैं।

प्रभु श्रीराम के जन्मकाल का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि अयोध्या में चारों भाइयों के जन्म के अवसर पर पिता राजा दशरथ जी व तीनों माताओं ने खूब मंगलगीत गवाये और पूरी प्रजा में खूब अन्न धन बांटे। भगवान् का जन्म होते हीं पूरी धरती सुरम्य हो गयी। सभी अवधवासी कृतार्थ हो गये। धीरे धीरे भगवान् बड़े होते है और शिक्षा लेने गुरु वशिष्ठ के गुरुकुल जाते हैं। वहाँ बहुत अल्पकाल में ही चौदहों विद्याओं के ज्ञाता हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि गुरु विश्वामित्र के साथ भगवान् श्रीराम उनके आश्रम जाते हैं। जाने का बहाना तो राक्षसों का वध करना था, लेकिन उसमें अपने भक्तों का उद्धार करना प्रमुख प्रयोजन था। मार्ग में जाते समय अपने चरणों से प्रभु ने अहिल्या का उद्धार किया।

मिथिला में राजा जनक से स्वयंवर का निमन्त्रण मिलने पर गुरु विश्वामित्र राम लक्ष्मण को लेकर मिथिला पहुँचे तो वहाँ प्रभु राम और माता सीता के पुष्प वाटिका में प्रथम मिलन का मनोरम वर्णन करते हुए कहा कि श्रीराम की सुन्दरता देखकर सीता जी और उनकी सखियां उनके रूप का पान कर अपना जीवन धन्य समझने लगीं। प्रभु श्रीराम भी जानकी जी को देखकर मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं।

कथा व्यास ने सीता स्वयंवर का वर्णन करते हुए कहा कि जानकी जी से विवाह करने की इच्छा से सहस्त्रबाहु, रावण सहित अनेक राज्यों से आये राजाओं ने शिव धनुष को उठाना चाहा किन्तु कोई धनुष को हिला भी नहीं सका, तब उचित अवसर देख गुरु विश्वामित्र ने श्रीराम को धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने का आदेश दिया। भगवान् ने जैसे हीं धनुष उठाई, धनुष दो टुकड़ों में अलग हो गयी। जानकी जी ने राम जी को जयमाला पहनायी और प्रभु ने माता सीता का वरण किया। कथा व्यास

ने अलग-अलग प्रसंगो पर अनेकों भजनों का सरस गायन कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

मंच पर कथा के दौरान श्री राम जी द्वारा धुनुष तोड़ने एवम सीता विवाह की मनोरम झांकी प्रस्तुत की गई।

कथा का विश्राम आरती से हुआ।

इस अवसर पर गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, काली बड़ी महन्त रविन्द्रदास जी, हनुमान मंदिर के महंत रामदास, यजमान उमेश अग्रहरि कथा में उपस्थित रहे।

संचालन डॉ० अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने किया।